*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*
*Vol. 18, Issue No. 5, August-2021, ISSN 2230-7540*

# नागार्जुन के कथा साहित्य में शिल्प-योजना तथा जनवादी चेतना पर एक अध्ययन

**Rajendra Kumar Piwhare***

Assistant Professor (Hindi), Government College, Venkatnagar, District Anuppur (MP)

***सारांश –*** *हिंदी साहित्य के आधुनिक कल के प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख साहित्यकार बाबा नागार्जुन जनवादी भी थे| साहित्य प्रतिभा के ऐसे व्यक्तित्व जिन्होंने मानव जीवन के सभी पहलुओं को सूझा रूप से देख उसका चित्रण अपनी भावनाओं में पिरोकर शब्दों में ढालकर कथा-साहित्य में साहित्य प्रेमियों के सम्मुख खुलकर रखा है| यदपि रचनाकार के भौतिक व्यक्तित्व का परिचय उसकी कलाकृति में प्रतिबिंबित होता है, तथापि उसकी कलात्मकता से अलग भी उसका संसार होता है| एक अनुसंधाता को किसी कलात्मकता के अध्ययन में उसके व्यक्तित्व का अध्ययन इसीलिए महत्वपूर्ण होता है, कि एक साहित्यकार के व्यक्तित्व की सम्पूर्ण जानकारी उसकी आदतें, उसके शौक, उसकी वृति प्रकृति, उसकी विचारधारा आदि किसी एक स्थान पर उपलब्ध नहीं होती| इसी जिज्ञासा के परिणाम स्वरूप लेखक का बचपन, शिक्षा, दीक्षा, जीविका आदि बातें देखी जाती है| इन परिस्थितियों का लेखक की सजन-प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है| अपने जीवनकाल में प्राप्त अनुभवों से लेखक का निजी एवं साहित्यिक व्यक्तित्व आकार बद्ध होता है| साहित्यकार की अनुभव-सम्पन्नता से उसकी जीवनद्रष्टि तथा कलाद्रष्टि भी विकसित होती है| जीवन में प्राप्त अनुभवों से कलाकार के व्यक्तित्व को आकार प्राप्त होता है| उसी का प्रतिबिंब उसके साहित्य में पड़ता है|*

***मुख्यशब्द –*** *नागार्जुन, कथा साहित्य, शिल्प–योजना, जनवादी चेतना, मानव जीवन, प्रगतिशील विचारधारा*

----------X----------

## प्रस्तावना

नागार्जुन आधुनिक हिंदी साहित्य के कवि एवं कथाकार के रूप में उभर आये है| उन्होंने कथा साहित्य का सृजन कर न केवल हिंदी साहित्य को समद्ध किया है बल्कि जन-जन की पीड़ा को आत्मसात किया है| और अपने पाठकों समीक्षकों को भी उस पीड़ा से पूरी संवेदनशील से साक्षात्कार कराने में सक्षम हुए है| वे साहित्यकार के उच्च आसन पर बैठ कर जनता के प्रति केवल सहानभूति ही व्यक्त नहीं करते बल्कि आम जनता से घुलमिल कर उसके ही एक अभिंग अंग बन कर उसके सुख-दुःख को पुरे हर्षोल्लास और देशज संवेदन से जीते है| इन अर्थों में उनका साहित्य अनुभूति की प्रमाणिकता से ओत-प्रोत होने के कारण सहज स्वभाविक और पठनीय है| उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए पाठक को स्वाभिक संवेदनों का स्वाद मिलता है| उनका साहित्य अपनी साधारणता से असाधारण है|

हिंदी कथा-साहित्य को अनेक कथा साहित्यकारों ने अपना अमूल्य योगदान देकर समर्द्ध किया है| हिंदी कथा साहित्य में जनवादी चेतना तीव्र होती हुई दिखाई देती है| जिसमें युगीन यथार्थ और उपेक्षित जन-जीवन का चित्रण किया जा रहा है| कथा साहित्य में मानव जीवन की विविध अनुभूतियों, संवेदनाओ की यथार्थ अभिव्यक्ति हो रही है| हिंदी-साहित्य के प्रतिबद्ध लेखकों में बाबा नागार्जुन का विशिष्ट स्थान है| चाहे कविता हो या गद की कोई विधा, नागार्जुन के लिए लेखन का उद्देश्य सामाजिक राजनीतिक यथार्थ का चित्रण और शोषित और पीड़ित आम-आदमी से प्रतिबद्दता है| नागार्जुन के कथा-साहित्य में जनवादी चेतना की प्रवृतियां भरपूर मिलती है| अत: इस दिशा में कथा साहित्य का विवेचन करना अत्यंत आवश्यक है|

## नागार्जुन का कथा साहित्य

हिंदी कविता के दूसरे कबीर के रूप में लोकप्रिय नागार्जुन का यह एकांगी परिचय है। कबीर ने तो केवल कविताएँ ही रचीं, लेकिन इस आधुनिक कबीर उर्फ नागार्जुन ने प्रचुर मात्रा में गद्य साहित्य भी रचा और अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से समयुगीन समस्याओं की गहरी पड़ताल भी की। उनके तमाम उपन्यास इस बात के प्रमाण हैं कि उन्होंने हिंदी

www.ignited.in

कथा किया। सुविस्तार ही का परम्परा-प्रेमचंद की साहित्य-नागा भाँति ही की प्रेमचंदर्जुन भी गाँवों में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध रचनात्मक जेहाद छेड़ते हैं। अपनी कविताओं के माध्यम से वे लोकजागरण करते नजर आते हैं और अपनी कथाओं में भी वे लोकजीवन में व्याप्त विसंगतियाँ, अन्याय, अनाचारपापाचार-, सामंतवाद, मजदूरों की पीड़ाओं से होते हुए साम्राज्यवाद आदि अनके तरह की बुराइयों पर गंभीर मध्य के कथा हैं। करते विमर्श-यह हैं। चलते कहते बात की मन अपने वे से माध्यम के संवादों केवल को नागार्जुन लोग कि है लगता सा-अन्याय बड़ा बहुत कम भी पक्ष वाला कथाकार उनका जबकि हैं देखते में रूप-कवि है। नहीं उल्लेखनीय

हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद के नाम पर या आधुनिकबोध के नाम पर उपन्यासों में नागरजीवन के अनेक परिवर्तनों को रेखांकित करने की होड़-सी मची रही जबकि गाँव का जीवन निरंतर त्रासद स्थितियों से दो-चार होता रहा। नागार्जन ने अपने कथाकार को गाँवों तक सीमित करते हुए जो कथाएँ कहीं हैं, वे क्लासिक बन गईं। उनके उपन्यासों की गहरी आंचलिकता हमें गाँव के जीवन से गहरे तक जोड़ देती हैं। गाँवों के जीवन में पनपने वाले पाप और पाखंड को नागार्जुन ने निकट से देखा और महसूसा। बहुत हद तो उन्होंने अपने इर्द-गिर्द उन त्रासदियों को भोगा भी इसीलिए उन की अधिकांश कथाएँ कपोल-कल्पित बिल्कुल नहीं लगती, वरन् यही महसूस होता है, कि लेखक एक रिपोर्टर की मानिंद आँखों देखा हाल बयाँ रहा हो। नागार्जन की कथाओं से गुजरते हुए कम से कम मुझे तो बिल्कुल ही महसूस नहीं हुआ कि मैं कोई कहानी पढ़ रहा हूँ। लगा, जैसे वे अपने समय की पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों का हलफिया सत्य उद्घाटित कर रहे हैं।

नागार्जुन का कथाकार अपनी छवि चमकाने के लिए या कोई कलात्मक खिलंदड़ेपन की रौ में बह कर कथाएँ नहीं कहता, वरन वह अपने समय के विरुद्ध हस्तक्षेप करने के लिए एक सायास कोशिश करता है। यही लेखकीय-धर्म है कि वह अपनी रचनाओं के माध्यम से युग के सच को रूपायित करे। और वैसे भी नागार्जुन चूकने वाले लेखक नहीं रहे। जिस बेबाकी के साथ उन्होंने कविताएँ लिखीं, उसी बेबाकी और हिम्मत के साथ उन्होंने गाँव की व्यथा-कथा कही। उनकी कहानियों में ब्राह्मणवाद, सामंतवाद और अनेक तरह के पाखंडवादों के खिलाफ नागार्जुन की कथाएँ एक तरह का आंदोलन हैं, जो आज भी जारी रहना चाहिए। तभी तो नागार्जुन जैसे लेखक रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, बलचनमा, हीरक जयंती, वरुण के बेटे, नई पौध, दुखमोचन, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, कुंभीपाक, गरीबदास और पारो जैसी कालजयी कथात्मक कृतियाँ रच पाते है। आसमान में चंदा तैरे उनका इकलौता कथा संग्रह है। उन्होंने कहानियाँ कम ही लिखीं मगर उसकी भरपाई एक दर्जन उपन्यास लिख कर कर दी। नागार्जुन ने जिन गाँवों की कथाएँ कहीं हैं, वे गाँव आज भी लगभग वैसी ही त्रासदियाँ झेल रहे हैं। इसलिए नागार्जुन पहले से ज्यादा प्रासंगिक बने हुए हैं।

## सामाजिक स्थितियों को मार्मिक वर्णन

नागार्जुन जिन गाँवों को, और जिन स्थितियों को मार्मिक वर्णन करते हैं, वे स्थितियाँ आज भी दृष्टव्य हो जाती हैं। इसीलिए हर कालजयी लेखक की कृतियाँ वर्षों तक जीवंत और सामयिक बनी रहती है। रतिनाथ की चाची जैसे उपन्यास मानो आज के समाज की कथा कह रहे हैं। उपन्यास का यह संवाद भी झन्नाटेदार तमाचे की तरह लगता है, जब गौरी का गर्भ गिराने के लिए आने वाली चमाइन दो टूक कहती है, " एक बात कहती हूँ। माफ करना बड़ी जातवालों की बिरादरी बड़ी मलेच्छ, बड़ी निष्ठुर होती है मलकाइन। हमारी भी बहू-बेटियाँ राँड हो जाती हैं पर हमारी बिरादरी में किसी के पेट से आठ-आठ, नौ-नौ महीने का बच्चा निकाल कर जंगल में फेंक आने का रिवाज नहीं है। ओह, कैसा कलेजा होता है तुम लोगों का, मइया री मइया"। इस संवाद के बरक्स आज के हालात देखें तो जिस मलेच्छ समाज की ओर चमाइन इशारा करती है, वह मलेच्छ समाज तो अब न केवल गाँवों में वरन् शहरों तक पसर चुका है। इस तरह देखें तो नागार्जुन जिन मुद्दों का संस्पर्श करते हैं, वे मुद्दे आज भी हमें मथ रहे हैं। गाँवों में रहने वाली नारियों की दुर्दशा को तो नागार्जुन जैसे कुछ ज्यादा ही मन लगा कर अभिव्यक्त करते हैं। नारी के दुख से दुःखी नागार्जुन ने एक बार एक समाचार पत्र में यहाँ तक लिख दिया था, कि "अगर मेरा अगला जन्म हो तो मैं नारी बनना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि सबसे बड़ी हरिजन जो हैं महिलाएँ हैं। इनका दलितपन कब समाप्त होगा, यह हमें नजर नहीं आ रहा है"। इस कथन को देखें और नारी विषयक नागार्जुन की कथाएँ देखें तो साफ हो जाता है, कि यह कथाकार स्त्री के सवाल पर कितना संजीदा है।

## जनवादी चेतना का स्वरूपगत विववेचन

जनवादी चेतना विश्व के सभी महँ साहित्यकारों की कृतियों में द्रष्टिगोचर होती है| किसी न किसी प्रसंग में साहित्यकार एस चेतना को स्थान देते हुए जनता के साहस, उत्साह एवं परोपकार भावनाओं को आरोपित कराने का साहस करता है| जनता के प्रतिनिधि बनकर ये लेखक लोगों की आशा-निराशा का वर्णन करते यूए उन्हें प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते है| हिंदी में जनता की स्थिति गति की लेखक पहले से करते आ रहे है, किन्तु जनता की धड़कन को ध्वनित करने वाली चेतना बहुत कम लेखकों में पाई जाती है| जनवादी चेतना

www.ignited.in

समस्त समाज के जन-जन के मन-मन की आशा-निराशा इनकी स्थिति गति उनके विश्वास शोषकों के प्रति उनकी क्रांतिकारी चेतना आदि को पूरी तरह से जनता से जोड़ती है| यह साहित्य को जनवादी साहित्य बनाती है| हम इस जनवादी साहित्य में अपने मस्तिष्क के भावों और हृदय की धड़कनों को सुन सकते है| अत: जनवादी चेतना अत्यंत महत्वपूर्ण है|

**जनवाद का स्वरुप:**

लोकतंत्र तथा जनवाद का अध्ययन करते समय उसके दो स्वरुप सामने आते है|

1. पूंजीवादी जनवाद
2. समाजवादी जनवाद

**1. पूंजीवादी जनवाद**

दुनिया के बहुत बड़े हिस्से में सामंतवादी व्यवस्था थी| इस सामंती व्यवस्था का विरोध होने लगा, संघर्ष होने लगा| फलस्वरूप परिणाम यह हुआ कि यह व्यवस्था टूटने लगी, चरमरा गरी, खत्म हो गयी| जहाँ पर यह हुआ वहां पर पूजीपति एवं धनिक वर्ग के हाथ में समाज व्यवस्था एवं सत्ता चला गया| इसे ही पूजीवादी जनवाद कहा जाने लगा| पूंजीवादी जनवाद यह खास अर्थात् विशिष्ट वर्ग तक ही सिमित रहा| पूंजीवादी जनवाद यह संकुलित दायरे में ही घूमता रहा| जनवाद है| जहाँ ये जनवाद मेहनतकश लोगों के लिए दमन का एक तंत्र था वहां यह कुछ अल्पसंख्यक वर्ग के लिए जनवाद होता था| फिर भी यह कहना उचित होगा कि यह जनवाद तानाशाही से ठीक ही था|

**2. समाजवादी जनवाद**

पूंजीवादी जनवाद के उत्पीड़न की दें याने समाजवादी जनवाद है| शोषित, पीड़ित, उपेक्षित जनता का समाजवादी जनवाद था| यह जनवाद बहुसंख्यक लोगों का जनवाद था| इसके दायरे में बहुत बड़ा समाज आता था| एस कारण एस जनवाद को समाजवादी जनवाद तथा जनता का जनवाद भी कहा जाने लगा| समाजवादी जनवाद में सत्ता का केंद्र था, सर्वहारा व्यक्ति इसके साथ में मजदूर एवं मेहनतकश वर्ग की शक्ति रहती थी| इसकी बुनियाद में समाजवादी विचारधारा रहती है| इसका प्रमुख उद्देश्य यह होता है, कि समाजवादी समाजव्यवस्था का निर्माण करना और इसे मार्कर्सवाद में रूपांतरित करना| यह जनवाद जनता के नैतिक, संस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक एकता का दृढ आधार बनता है|

**जनचेतना एवं नागार्जुन की युगीन परिस्थितियों का विवेचन**

साधारण व्यक्ति से लेकर महान साहित्यकार, वैज्ञानिक, दार्शनिक, समाजशास्त्री सभी अपने युगीन परिवेश से प्रभावित व संचालित होते है| कोई भी साहित्यकार अपने चारों ओर के अच्छे-बुरे प्रभावों से चाहते हुए भी अछूता नहीं रह सकता | अपनि आंतरिक जन्मजात प्रतिभा के साथ ही मनुष्य का युगीन परिवेश उसके व्यक्तित्व व क्रतिव्य का नियामक होता है| अत: किसी भी साहित्यकार के क्रतिव्य का अध्ययन उसके युगीन संदर्भ को समझे बिना अधूरा ही होता है| वह जिस वातावरण में रहता है, तथा जिस युग में साँस लेता है, उस युग की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, तथा परिस्थितियां प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसके दिल और दिमाग को प्रभावित कराती है, साथ ही तत्कालीन ज्वलंत सवाल उसके मस्तिष्क को मथते है| साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल की परिस्थिति से प्रभावित होता है| जब कोई लहर देश में उठती है, तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव होता है, और उसकी विशाल आत्मा अपने देश बंधुओं के कष्टों से विचलित हो उठती है, और उस तीव्र लहर में वह रों उठता है,पर उसके रुदन में भी व्यापकता होती है| वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है|

**नागार्जुन का कथा-साहित्य और जनवादी चेतना**

हर लेखक का जीवन के प्रति अपना विशिष्ट द्रष्टिकोण होता है, अपने जीवन द्रष्टिकोण होता है अपने जीवन द्रष्टिकोण को वह पाठकों तक पहुँचाना चाहता है| इसलिए वह साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति कर्ता है| उपन्यासकार नागार्जुन एक सर्जनशील कलाकार है| गरीबी, दरिद्रता, भूख, पीड़ा, का उन्होंने स्वयं बचपन से अनुभव किया है| भ्रमणशील प्रवत्ति के कारण भारतीय उपेक्षित समाज को उन्होंने नजदीक से देखा है, परखा है, अत: गरीबों के पक्षधर बनकर उन्होंने साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति की है| उपन्यासकार नागार्जुन परमार्थ में ही जीवन की सार्थकता मानते है| अपना जीवन कार्य पूर्ण होते ही वह देह त्याग करना चाहते है| मृत्यु के बाद भी लोगों की सेवा करने का ब्रत वे नहीं छोड़ते| बरगद का पेड़ अपनी सुखी टहनियों को जलाकर ईट पकाकर ग्राम कमेटी पर मकान बनाने का परामर्श जैकिसुन से देता है| नागार्जुन के प्राय: सभी उपन्यास ग्राम जीवन पर ही केन्द्रित है, क्योंकि यही वह जीवन है जिससे नागार्जुन सदा से ही परिचित रहे, जो इनके जीवन व अनुभूति का अभिन्न अंग रहा, जिसके प्रति उनकी प्रति उनकी सहानुभूति हार्दिक सच्ची व आत्मीय है|

www.ignited.in

## नागार्जुन के कथा -साहित्य में शिल्प-योजना

उपन्यासों व कहानियों के प्रणयन ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है| जनवादी रचनाकार नागार्जुन की उनकी वैचारिक प्रष्ठभूमि में देश का आम आदमी, कृषक मजदूर कभी ओझल नहीं हो सका| इसी कारण अनेक भाषाओं के ज्ञाता व विद्वान होने के बावजूद भी उन्होंने आम जन की भाषा में ही साहित्य सृजन किया है| आम जन की बोलियाँ और लोक जीवन की धुन उनके साहित्य में रची बसी है|

1. **भाषाशैली:** नागार्जुन अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे| संस्कृत पाली मैथली बंगला तो उन्हें बचपन से ही आती थी| संस्कृत काव्य रचना में छात्र जीवन में ही उन्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था| आशु रचना में भी वे प्रवीण थे, संक्षेप में उनके उपन्यासों व काव्य ग्रंथों में उनकी भाषा के विविध स्वरूपों का वर्णन निम्नलिखित रूप से करेगे|

## नागार्जुन के कथा साहित्य में भाषा

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है| रचनाकार की अभिव्यक्ति का सम्बन्ध उसकी वैचारिक प्रतिबद्दता से ही होता है| किसी भी रचनाकार की शक्ति उसकी भाषा और शैली ही होती है| शैली का विशिष्ट उसकी अलग पहचान बनाता है| उसी आधार पर नागार्जुन के उपन्यासों की भाषा शैली की अभिव्यक्ति हुई है|

## उपसंहार

नागार्जुन के सभी कथा साहित्य में जनवादी चेतना की सभी प्रवर्तियां लक्षित होती है| उनके कथा साहित्य के केंद्र में सामान्य जन है, और उनके जीवन की त्रासदी को सूक्ष्मता से देखने का प्रयत्न इन कथा साहित्य में हुआ है| सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक सभी क्षेत्र में सामान्य जन का शोषण लगातार हो रहा है| इस शोषण और अन्याय का विरोध करना एवं शोषणमुक्त मानवीय भावनाओं से युक्त समाज का निर्माण करना ही जनवाद लेखक नागार्जुन का उद्देश्य है| सामाजिक व्यवस्था शोषण पर आधारित व्यवस्था है|नागार्जुन ने उपन्यासों को भांति कहानियों में सर्वहारा वर्ग के जीवन के विविध पहलुओं की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है| नागार्जुन एक जनवादी व प्रगतिशील कथाकार है, उन्होंने आम जनता के जीवन को स्वंय भोगा ही नहीं बल्कि प्रत्यक्षदर्शी भी रहे है| जनवादी साहित्य विद्रोह विरोध एवं संघर्ष को प्राथमिकता प्रदान करता है| इन्ही विषयों पर जनवादी साहित्य खड़ा हुआ है|

नागार्जुन के कथा साहित्य में जनभाषा और शिल्पशैली का प्रयोग देखने को मिलता है| जनभाषा का प्रयोग जनता के समझने के लिए किया गया है| इसका कारण यह है कि जनभाषा आम आदमी समझ सकता है उनकी साहित्य तथा साहित्य केवल बुद्धिजीवियों के लिए नहीं है| वह आम आदमी तथा सर्वहारा व्यक्ति के लिए भी समझने योग्य है| इसलिए जनभाषा का प्रयोग वे करते है| उन्होंने जनभाषा का सहारा लिया है| नागार्जुन का साहित्य वादों से रहित एवं पूर्वगृह रहित है| उसमे किसी के प्रति पूर्वगृह नहीं है| समय के अनुकूल वे लिखते है, उनकी रचनाये यथार्थ तथा वस्तुस्थिति को व्यक्त करती है|

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


नागार्जुन रचनावली, खण्ड-1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ-V.

“Unsung Heroes of Bihar – Nagarjun”. मूल से 13 अगस्त 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 दिसंबर 2008.

नागार्जुन का रचना-संसार - विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2014, पृष्ठ-19.

द्रष्टव्य- AN INDIAN EPHEMERIS, vol. VII (A.D 1800-1999), स्वामी कन्नू पिल्लै, p.224.

“11जून, 1911 ई० का दृक्पञ्चाङ्ग” मूल से 5 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 जून 2020.

नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-13.

नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-15.

नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-16.

नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-17.

नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-19.

नागार्जुन रचना संचयन, संपादक- राजेश जोशी, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, पृष्ठ-327.


www.ignited.in

नागार्जुन का रचना-संसार, विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2014, पृष्ठ-30.

नागार्जुन रचनावली, खण्ड-1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ-XI.

नागार्जुन रचनावली, खण्ड-1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ-VI.

नागार्जुन रचनावली, खण्ड-3, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ-VIII.

नागार्जुन रचनावली, खण्ड-1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ-XIV.

नागार्जुन रचनावली, खण्ड-3, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ-IX.

नागार्जुन रचनावली, खण्ड-1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ-VII.

नागार्जुन रचनावली, खण्ड-7, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ-V-VI.

---

**Corresponding Author**

**Rajendra Kumar Piwhare***

Assistant Professor (Hindi), Government College, Venkatnagar, District Anuppur (MP)

rajendrapiwhare011@gmail.com